''राज्य और पराक्रम और महिमा तेरे ही हैं''

अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्ज़न में मत्ती 6:9-13 में चेलों की प्रार्थना ''हमें बुराई से बचा'' के साथ समाप्त होती है। परन्तु न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल की तरह हिन्दी में इसमें यह सुन्दर निष्कर्ष भी शामिल किया गया है: ''... [क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।]।''

जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे का मानना था कि ये शब्द आत्मा की प्रेरणा के बिना जोड़े गए थे। उसका कहना था, ''एक क्षेपक के रूप में इस, स्तुति को अच्छे कारण से नकारा जाता है''[1] ASV के अनुवाद में अनुवादक हमें यह समझाना चाहते थे कि इन शब्दों को शामिल करने का कोई प्रमाण है, क्योंकि पादटिप्पणी में उन्होंने लिखा है, ''थोड़े बहुत अन्तर से, बहुत से अधिकारी, कुछ प्राचीन लोग इसके साथ जोड़ते हैं *राज्य, और पराक्रम और महिमा तेरे ही हैं। आमीन।*''

प्रसिद्ध निष्कर्ष निकालने वाले उन प्राचीन अधिकारियों में से कुछ अधिकारी काफी आदरणीय हैं। नये नियम के यूनानी हस्तलेख ''W'' या ''Washington'' (क्योंकि इसे वाशिंगटन, डी. सी. में रखा गया है) में मिलते हैं। अल्बर्ट हक्क[2] ने ''W'' हस्तलेख की तिथि पांचवीं शताब्दी बताई है, जबकि *इन्टरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया*[3] में ''सम्भवत: 4थी शताब्दी'' कहा गया है। यूनानी हस्तलेख *थीटा*[4] में भी अन्त लम्बा है (जिसकी तिथि नौवीं और दसवीं शताब्दी के बीच की है)। हाल ही की विद्वता में *थीटा* का प्रभाव बढ़ रहा है। पुराने लातीनी हस्तलेख ''f'' में एक प्रसिद्ध निष्कर्ष मिलता है जो छठी शताब्दी का है। यह पेशिता सीरियाक में भी मिलता है, जिसके लिए भाई मैक्गार्वे ने कहा है:

> बहुत से प्रमाण मिलकर यह प्रमाणित करते हैं कि यह हमारे युग की दूसरी शताब्दी में बनाया गया था, और जहां तक नये नियम की बात है, यह यूनानी शास्त्र से लिया गया जो मूल लेखकों द्वारा लिखे जाने के एक सौ वर्ष से भी पहले तैयार हो गया था। वर्तमान समय से इसकी तिथि से यह सीरियाई मसीहियों की प्रचलित बाइबल थी, और वे इसका इस्तेमाल अपनी व्यक्तिगत आराधना में करते थे।... बाइबल से जुड़ी आलोचना के लिए यह सबसे अधिक मूल्यवान संस्करण है।[5]

कई प्राचीन हस्तलेख सुन्दर स्तुति और अधिक महत्वपूर्ण होने के बावजूद इसे निकाल देते हैं। परन्तु इस प्रश्न में जिन शब्दों में विचार व्यक्त किए गए हैं, वह पवित्र शास्त्र के अनुसार है (देखिए 1 इतिहास 29:11; 2 तीमुथियुस 4:18; यहूदा 25)। पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता कि यह वाक्यांश बाद में जोड़ा गया, इसलिए इसको समर्पित पाठ व्यर्थ नहीं होगा।

''राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।'' कहते हुए आपका हृदय प्रशंसा, स्तुति और भय से भर जाना चाहिए। आप स्वतन्त्रता के हर भाव को त्याग कर अपने आपको परमेश्वर के चरणों में समर्पित कर रहे हो। आपकी जीभ चापलूसी कर रही है। ये शब्द किसी भीड़ के सामने या एकांत में याद की गई प्रार्थना के रूप में बार-बार कहने व्यर्थ और उपहासपूर्ण हैं, परन्तु जब यही शब्द दीन और कृतज्ञ मन की गहराइयों से निकलें, तो सम्मान देने के लिए प्रवचन को इससे अच्छे ढंग से समाप्त नहीं किया जा सकता है।

''राज्य'' का अर्थ

''राज्य ... तेरा है'' कहने से आपका क्या अभिप्राय होता है? हम जानते हैं कि जब यीशु ने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया तो उस समय राज्य अस्तित्व में नहीं था। वह चाहता था कि वे राज्य के आने के लिए प्रार्थना करें। फिर इस अन्तिम बिनती का क्या अर्थ है जिसमें राज्य को अस्तित्व में और पहले से ही परमेश्वर का बताया गया है? जोसेफ हेनरी थेयर[6] का कहना है कि यूनानी शब्द *basileia* के अनुवाद ''राज्य'' का अर्थ केवल ''एक राज्य'' ही नहीं बल्कि ''राजसी सामर्थ, राजा होना, सत्ता, शासन'' है। एक *बेसिलिया* अर्थात राज्य था जिसका अस्तित्व उस समय नहीं था, परन्तु जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी (''तेरा राज्य आए''; मत्ती 6:10)। यीशु अपने चेलों को बता रहा था कि इस राज्य को प्रार्थना का मुद्दा न बनाया जाए। एक *बेसिलिया* भी था जिसका अस्तित्व पहले से ही था (''राज्य ... तेरा है'')। इसका क्या अर्थ था? निश्चय ही यह वह राज्य नहीं था जिसके विषय में दानिय्येल ने कहा था कि स्वर्ग का परमेश्वर उसे खड़ा करेगा (दानिय्येल 2:44); क्योंकि 30 ईस्वी के पिन्तेकुस्त के दिन से बहुत पहले, एक राज्य पहले से ही अस्तित्व में था जिसका सम्बन्ध परमेश्वर से था। एक हज़ार वर्ष पहले, दाऊद ने परमेश्वर की स्तुति करते हुए इस राज्य की बात की थी: ''राज्य तेरा है'' (1 इतिहास 29:11)। चेलों की प्रार्थना की अन्तिम बिनती में वही बात है जो दाऊद के मन में थी अर्थात भजन लिखने वाले के कहने का भाव वही होगा जो थेयर ने दिया है अर्थात ''राजसी सामर्थ, राजा होना, सत्ता, शासन।''[7]

इस बाद वाले अर्थ से क्या संदेश मिलता है? इसका अर्थ है कि सब कुछ परमेश्वर के अधीन है: ''महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ और विभव तेरा ही है।'' यह परमेश्वर की सृष्टि है, और जो कुछ भी है वह या तो उसके निर्देश से है या उसकी अनुमति से। उसके पास असीमित सत्ता है। ऐसा अधिकार बाइबल के परमेश्वर को देकर हम आकाश और पृथ्वी के उस एक परमेश्वर का आदर कर रहे होते हैं। हम पुकार-पुकार कर कह रहे होते हैं कि लोगों के सब देवता केवल मूर्तियां ही थीं (भजन 96:5) जो न देख सकती हैं, न सुन सकती

हैं और न ही समझ सकती हैं (दानिय्येल 5:23)। हम यह दावा कर रहे हैं कि घमण्ड और बुद्धि के देवता (अपने आपको देवता बनाना और मन के अनुसार पूजा करना) व्यर्थ और निर्बल हैं। हम परमेश्वर को बता रहे हैं कि हम उसे कितना मानते हैं:

> यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर कहलाते हैं (जैसा कि बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं)। तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात पिता जिस की ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिए हैं और एक ही प्रभु है, और हम भी उसी के द्वारा हैं (1 कुरिन्थियों 8:5, 6)।
>
> यहोवा राजा है (भजन 93:1)।
>
> केवल तू ही परमेश्वर है (भजन 86:10)।

प्रलय की बाबुल की परम्परा से जुड़े देवता[8] तो आपस में झगड़ते और एक दूसरे पर क्रुद्ध होते थे,[9] परन्तु बाइबल का परमेश्वर ऐसा परमेश्वर है जिसका नूह, दुष्ट लोगों और सारे संसार पर नियन्त्रण था। बाबुल की कहानी इसके देवताओं को स्वामियों के रूप में ऊंचा नहीं करती क्योंकि पानी देखकर वे घबरा गए थे और ''कुत्तों की तरह इकट्ठे होते थे।'' ''राज्य ... तेरा है,'' कहकर, आप मान रहे होते हैं कि ''यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है'' (व्यवस्थाविवरण 6:4)। आप यह स्वीकार कर रहे होते हैं कि वायु और समुद्र उसकी आज्ञा मानते हैं, और सब मनुष्य ''उसकी प्रजा, और उसकी चराई की भेड़ें हैं'' (भजन संहिता 100:3)।

प्राचीन फारसी धर्म ज़ोरास्ट्रियनवाद [ज़रतुश्त मत] में, दो विरोधी देवता थे: ओरमज्ड (भलाई और प्रकाश का) और अहरिमन (बुराई और अंधेरे का)।[10] इसके विपरीत बाइबल केवल एक ही परमेश्वर को जानती है, जिसका राज्य समय और स्थान में, मन और तत्व और आत्मा पर है। क्या संसार में पाई जाने वाली बुराई के लिए वह ज़िम्मेदार है? नहीं, वह तो विश्वासयोग्य और अन्याय न करने वाला परमेश्वर है (व्यवस्थाविवरण 32:4); वह तो धर्मी और न्यायी है। परमेश्वर का संसार का राज्य और शासन इतना स्पष्ट है कि बुराई को घटने की अनुमति देकर, वह कहता है, ''मैं उजियाले का बनानेवाला और अन्धियारे का सृजनहार हूं, मैं शान्ति का दाता और विपत्ति को रचता हूं, मैं यहोवा ही इन सभों का कर्त्ता हूं'' (यशायाह 45:7)।

यह भी स्मरण रखें कि परमेश्वर ने फारसी धर्म को जानने वाले राजा कुस्त्रु से ये बातें कीं। परमेश्वर उसे और हम सबको बता रहा था कि राज्य केवल उसी का है: ''मैं यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं'' (यशायाह 45:5)।

कोई स्वर्गदूत परमेश्वर के शासन के विरुद्ध विद्रोह करके (यहूदा 6), परमेश्वर के अधीन ही रहता है। उसे न्याय के उस महान दिन तक अंधकार की बेड़ियों में रखने के लिए स्वर्ग से फैंक दिया जाता है। ऐसा विद्रोही जानता है कि परमेश्वर अपने राज्य में है; कांपते

हुए कष्ट का समय निकट आने पर वह चिन्तित होता है। जिस प्रकार अदन में उसने आदम और हव्वा को भरमाया था, वैसे ही उसे लोगों को भरमाने की अनुमति मिल सकती है। उसे अय्यूब जैसे किसी व्यक्ति की परीक्षा लेने की अनुमति भी मिल सकती है, परन्तु ऐसी परीक्षा परमेश्वर की निगरानी में ही होती है। स्वर्ग के परमेश्वर के पास सारा अधिकार है, और शैतान को न चाहते हुए भी उसके सामने झुकना पड़ेगा। परमेश्वर जो भी अनुमति दे, शैतान अवसर नहीं गंवाता है; परन्तु परमेश्वर नियन्त्रण अपने हाथ में रखता है और सब काम अपनी योजना के अनुसार ही होने देता है। ऐसा वह कैसे कर सकता है? वह ऐसा कर सकता है क्योंकि राज्य अर्थात शासन तो उसी का है। सब वस्तुएं उसी की, उसी के द्वारा और उसी के लिए हैं। राजा अपनी अनुमति से शासन करता है, क्योंकि वह राजाओं का राजा है और प्रमुख के रूप में सबसे ऊंचा किया गया है।

30 ईस्वी वाले पिन्तेकुस्त के दिन से ही, परमेश्वर ने आकाश में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे की सारी शक्ति (मत्ती 28:18; फिलिप्पियों 2:10) स्वेच्छा से इकलौते पुत्र को दे दी है। वह पुत्र न केवल अपने राज्य (बुलाए हुए लोग, राज्य के पुत्र) का राजा है, बल्कि वह पृथ्वी के राजाओं का भी हाकिम है (प्रकाशितवाक्य 1:5)। समय के अन्त तक वह राजा ही रहेगा (1 कुरिन्थियों 15:24), जब वह राज्य को अपने पिता के पास सौंप देगा।

निश्चय ही जिसने यीशु को वह सारी शक्ति दी, स्वयं वह अपने पुत्र के अधीन नहीं हुआ। राज्य उसे सौंपने के समय पुत्र अपने आपको और हमें भी उसके हाथ में सौंप देगा, और सब कुछ फिर से महान परमेश्वर के अधीन हो जाएगा, ताकि ''सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो'' (1 कुरिन्थियों 15:28)। उसके दानों और अनुग्रह के लिए परमेश्वर का धन्यवाद वर्णन से बाहर है! हमारे परमेश्वर की बुद्धि और मंशा की महिमा हो!

यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है,
और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है।
हे यहोवा के दूतो, तुम जो बड़े वीर हो,
और उसके वचन के मानने से उसको पूरा करते हो
उसको धन्य कहो!
हे यहोवा की सारी सेनाओ,
हे उसके टहलुओ, तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो,
उसको धन्य कहो!
हे यहोवा की सारी सृष्टि,
उसके राज्य के सब स्थानों में उसको धन्य कहो।
हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह!
(भजन संहिता 103:19-22)।

''और पराक्रम''

भौतिक शक्ति

परमेश्वर के राज्य के अर्थ पर मनन करते हुए, हमने चेलों की प्रार्थना की अन्तिम बिनती में उल्लेखित दूसरी बात अर्थात ''पराक्रम'' के बारे में भी कुछ सीखा है। सर्वशक्तिमान के पराक्रम अथवा शक्ति पर ध्यान करके, हम आश्चर्यचकित हो जाते हैं! उसने न केवल हमारे लिए यह अद्‌भुत पृथ्वी बनाकर, इसे मन और तत्व से भरपूर किया बल्कि इसे बिना सहारे के लटकाया भी (अय्यूब 26:7)। उसका भौतिक संसार इतना विशाल होने पर भी, उसकी सृष्टि का केवल एक छोटा सा पहलू है, कि मनुष्य की सबसे शक्तिशाली दूरबीनें भी उसके आयामों को माप नहीं सकतीं। वह हमारे संसार को एक हज़ार मील प्रति घण्टा की गति से दिन और रात में ही नहीं बदलता, बल्कि वह तो हमारे संसार को सूर्य के इर्द-गिर्द 18 मील प्रति सैकण्ड की गति से लगभग 100 करोड़ मील तक एक अदृश्य मार्ग पर चलाता भी है। प्लूटो के लिए उसका मार्ग 35 करोड़ मील लम्बा है, इतना लम्बा कि सूर्य के इर्द-गिर्द एक चक्कर लगाने के लिए प्लूटो को 248 वर्ष से अधिक समय लग जाता है। एक रेडियो संदेश एक सैकण्ड में संसार के सात चक्कर लगाता है, परन्तु सबसे निकट वाला तारा भी इतना दूर है कि उसी संदेश को, उस तारे से पृथ्वी पर भेजने के लिए चार से अधिक वर्ष लगेंगे। विलियम्स टाउन, मेसाचुएट्स में विलियम्स कॉलेज की होपकिंस ऑब्ज़र्वेटरी की दीवार पर यशायाह 40:26 से यह पद लेकर लिखा गया है। ''अपनी आंखें ऊपर उठाकर देखो, किसने इनको सृजा? वह इन गणों को गिन-गिन कर निकालता, उन सबको नाम ले लेकर बुलाता है? वह ऐसा सामर्थी और अत्यन्त बलि है कि उनमें से कोई बिना आए नहीं रहता,'' संसार के विशाल आकार पर दाऊद के साथ अभिभूत होने के लिए आत्मा की प्रेरणा की नहीं बल्कि केवल एक प्राकृतिक दर्शन की आवश्यकता है।

जब मैं आकाश को,
जो तेरे हाथों का कार्य है,
और चन्द्रमा को तारागण को
जो तू ने नियुक्त किए हैं,
देखता हूं
तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे,
और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधी ले?
(भजन संहिता 8:3, 4; 33:6-9 भी देखिए)।

आत्मिक शक्ति

जैसे भौतिक सृष्टि की रचना करने वाली परमेश्वर की सामर्थ भयदायक है, वैसे ही पापियों को पवित्र बनाने वाली उसकी सामर्थ विनम्र और रोमांचकारी है। जितनी शक्ति परमेश्वर ने अणु में डाली है वह सुसमाचार के एक छोटे से संदेश अर्थात उद्धार दिलाने

वाली परमेश्वर की शक्ति के बराबर नहीं हो सकती। बम से संसार को आतंकित तो किया जा सकता है, परन्तु किसी के मन को बदला नहीं जा सकता। परमेश्वर का एक विनम्र बालक विनम्रतापूर्वक परमेश्वर के प्रेम के बारे में किसी पापी को बताकर शांति से जितना बड़ा काम कर सकता है वह काम पृथ्वी की कोई शक्ति नहीं कर सकती। परमेश्वर का वह विनम्र दास परमेश्वर का सहकर्मी है अर्थात वह एक माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर की सामर्थ किसी व्यक्ति के मन पर काम करती है। वह यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने और कब्र में से जी उठने का शुभ समाचार सुनाता है। जब कोमल हृदय पर सुसमाचार की प्रभावकारी शक्ति कार्य करती है, तो कोई रिश्तेदार या कोई हंसी उड़ाने वाला उसे बपतिस्मे में यीशु को अपने आपको सौंपने से रोक नहीं सकता। परमेश्वर की वह सामर्थ जो उत्तरी पवन या सूर्य की किरणों में उसकी शक्ति से भिन्न है, परन्तु है वह परमेश्वर की ही सामर्थ, पाप में डूबे एक स्वार्थी व्यक्ति को (जिसे परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था) एक नई सृष्टि में बदल सकती है! (देखिए भजन 86:10।) एक भटका हुआ मनुष्य, स्वर्ग की शक्ति से, धर्म और सच्ची पवित्रता की ओर मुड़ सकता है।

अनन्त शक्ति

नये सिरे से जन्म लेने पर हम धन्यवाद देते हुए अति आनन्दित होते हैं, क्योंकि हम देह के बिना भी एक बार फिर से जीएंगे। ''उसकी सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है'' (इफिसियों 1:19क)। हमें ''उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिलाया'' (इफिसियों 1:19ख, 20) परमेश्वर के साथ सदा तक रहने की मीरास मिली है। हम जानते हैं, ''कि जिसने प्रभु यीशु को जिलाया, वही हमें भी यीशु में भागी जानकर जिलाएगा, और तुम्हारे साथ अपने साम्हने उपस्थित करेगा'' (2 कुरिन्थियों 4:14) और सब कुछ हमारा है (1 कुरिन्थियों 3:21)।

वह इन हीन, पाप से श्रापित और नाशवान देहों को, अपनी महिमा में कैसे बदल सकता है? हम यह तो नहीं जानते कि कैसे, परन्तु उसकी सामर्थ में विश्वास रखते हैं ''जो ऐसा सामर्थी है कि हमारे मांगने और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है'' (इफिसियों 3:20)। उसके कार्य करने के अनुसार जिससे वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है (फिलिप्पियों 3:21), हम अविश्वास में भटकते नहीं बल्कि परमेश्वर को महिमा देते हुए विश्वास में दृढ़ होते हैं (रोमियों 4:20)। हमारी उत्सुकता यही है कि वह न केवल हमारी देहों को जिलाने की सामर्थ रखता है बल्कि उसमें अविश्वासी आत्माओं को आग के नरक में फैंकने की सामर्थ भी है (लूका 12:5)। वह ऐसा करना नहीं चाहता, परन्तु उसमें ऐसा करने की सामर्थ है।

''महिमा सदा तेरी ही है''

परमेश्वर के शासन को कोई चुनौती नहीं है और उसकी सामर्थ सबसे ऊपर है। उसकी

महिमा इतनी दीप्तिमान है कि कोई धोबी भी इतना सफेद नहीं धो सकता। जो भी आदर और महिमा मनुष्य या स्वर्गदूत को मिल सकती है वह उसी की है जो हमें अस्तित्व में लाया और जिसने हमें अपने अनुग्रह से छुड़ाया है। बहुत कारणों की सारी महिमा पिता को ही क्यों जाती है। इसका एक कारण यह भी है कि उसने कलीसिया की परिकल्पना की।

बड़ी सफ़ाई से बुनी सुन्दर डिज़ाइन वाली एक (राजस्थानी) रजाई को देखकर यद्यपि मैं इसे बनाने वाले को तो नहीं देख सकता, परन्तु न चाहते हुए भी मेरे मन में विचार आता है, ''जिसने भी इस रजाई को बनाया उसने इसे कितना बढ़िया बनाया है।'' स्वर्गदूतों और महादूतों ने समय के पूरा होने पर स्वर्ग से नीचे झांका और कलीसिया अर्थात छुड़ाए हुए लोगों, नये सिरे से जन्म लेने वाले बुलाए हुओं को देखा। स्वर्गीय स्थानों में प्रधानताओं और अधिकारों ने उन पवित्र किए गए लोगों को देखकर जो परमेश्वर की कलीसिया बनते हैं, परमेश्वर की बुद्धि के एक बड़े प्रदर्शन को देखा। वे जो हैरान थे कि संसार की नींव रखने से पहले परमेश्वर के मन में क्या था, अन्त में उसकी बुद्धि के प्रदर्शन को देख पाए, क्योंकि परमेश्वर ने एक ढंग बनाया था जिससे पापियों को पवित्र लोग बनाया जा सकता था। मनुष्य हों या स्वर्गदूत जब वे कलीसिया की महानता पर विचार करते हैं, तो उन्हें चाहिए कि उस सफेद से सिंहासन की ओर मुड़ें, अपने पर्दे को हटाएं और पुकारें, ''कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन'' (इफिसियों 3:21)।

''आमीन''

चेलों की प्रार्थना की अन्तिम बिनती का अन्तिम शब्द (*amen*) इब्रानी भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ है ''पुष्टि करना, समर्थन करना।'' पूरी बाइबल में इसका यही अर्थ है: ''ऐसा ही हो''; ''इसी प्रकार हो'' (व्यवस्थाविवरण 27:15-26; 1 इतिहास 16:36; नहेमायाह 8:6; रोमियों 1:25; इब्रानियों 13:21)। परमेश्वर करे कि आप जब भी चेलों की प्रार्थना पर विचार करें तो आपके लिए इसका अर्थ नया ही मिले।

> हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और विभव, तेरा ही है; क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा! राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान ठहरा है (1 इतिहास 29:11; यहूदा 24, 25 भी देखिए)।

पाद टिप्पणियां

[1]जे. डब्ल्यू मैक्गर्वे, *द न्यू टैस्टामेन्ट कमैन्ट्री,* vol.1, *मैथ्यू एण्ड मार्क* (लैक्सिंगटन: कैं.: पृ.न., 1875; रीप्रिन्ट, डिलाइट, आर्क.: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., पृ. न.), 64. [2]अल्बर्ट हक, *सिनोपसिस ऑफ़ द फ़र्स्ट थ्री गॉस्पल्ज़* 9वां सं., सं. हैन्स लेयट्ज़मैन, अनु. फ्रैंक लेसली क्रॉस (न्यूयॉर्क: अमेरिकन बाइबल सोसाइटी,

1936), XI. [3]यूनानी हस्तलिपि का नाम यूनानी वर्णमाला के आठवें अक्षर से निकला है।[4]*इन्टरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* सं. ज्योफरी डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 5:2953 में चार्ल्स फ्रिमोंट सिटरली, ''टैक्सट एण्ड मैन्यूस्क्रिप्ट्स ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट''।[5]जे. डब्ल्यू मैक्गर्वे, *एविडेंसस ऑफ़ क्रिश्चियनिटी* (सिनसिनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1886), 34. [6]सी. जी. विल्के और विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट,* अनु. व समी. जोसेफ एच. थेयर (ऐडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड: टी. एण्ड टी. क्लार्क, 1901; रीप्रिंट सं., ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: बेकर बुक हाउस, 1977), 96-97. [7]वहीं।[8]आधुनिकतावादी एस. आर. ड्राइवर ने बाइबल को यह श्रद्धांजलि: ''(सृष्टि और प्रलय) के बाबुल के लोगों के दोनों वर्णन बहुदेववादी हैं, जब इसके साथ मेल खाते बाइबल के वर्णन (उत्पत्ति 1 और 6-9) शुद्ध और उच्च एकेश्वरवाद के वाहन बन गए हैं; ...'' (*जे. मैकजी ऐडम्स, एंसियंट रिकॉर्ड्स एण्ड द बाइबल* [नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1946]),143 में उद्धृत।[9]*स्टैण्डर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* सं. ज्योफरी डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 2:823 में जॉर्ज फ्रेड्रिक राइट,*इन्टरनेशनल*, ''द डिलयुज ऑफ़ नोआह।'' [10]ए. एच. न्यूमैन, *ए मैनुअल ऑफ़ चर्च हिस्टरी,* vol. 1, *एनसियंट एण्ड मेडियवल चर्च हिस्ट्री* (1517 ई. तक), संशो. व विस्त. (फिलाडेल्फिया: अमेरिकन बेपटिस्ट पब्लिशिंग सोसाइटी, 1899), 36.